Golden Research Thoughts
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-11 | May-2014

" गांधीजी के विचारों की दृष्टि से शबरी का मूल्यबोध "

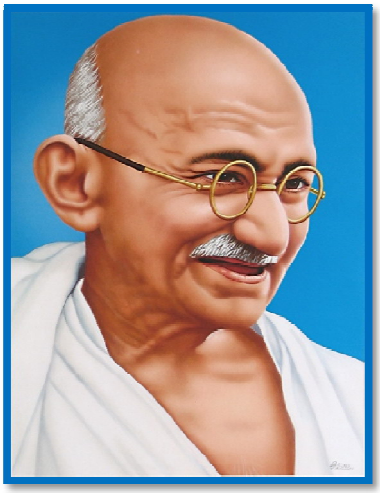

अशोक एम. पवार

स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ग.तु.पाटील महाविद्यालय, नंदुरबार

नरेश मेहता हिन्दी के प्रसिध्द रचनकार रहे हैं। वे सन 1942 के भारत छोडो आंदोलन में सक्रिय थे। मेहता जी गांधी जी के संपर्क में आने से उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए थे। इसीका परिणाम है कि मेहता जी के साहित्य में गांधी जी के विचार कहीं न कहीं उपस्थित हैं। महात्मा गांधी जी मानवतावादी महामानव थे। उनके द्वारा स्वीकृत अहिंसा, अछूतोदधार, मानवीयता आदि तत्व–गुणों को नरेश मेहता ने भी स्वीकार किया था इसलिए तो मेहता जी मानवतावादी रचनाकार के रूप में याद किये जाते हैं।महात्मा गांधी की तरह मेहता जी का भी कर्मवाद पर विश्वास था। कर्म ही मनुष्य का उध्दार कर सकता है। इस मत से प्रभावित नरेश मेहता ने शबरी खंडकाव्य लिखा।

शबरी नरेश मेहता का एक अत्यंज नारी की कथा के साथ युगीन वैचारिकता को प्रस्तुत करनेवाला खंडकाव्य है। यह कथा आदिकवि वाल्मीकि रामायण से ली गई है। "वाल्मीकि ने इसे मानवीय और सामाजिक समस्या के रुप में प्रस्तुत किया है। आदि कवि वाल्मीकि की दृष्टी में जो मानवीयता और सामाजिकता रही है वही वर्तमान संदर्भो में नरेश की मानसभूमि रही है।"[1] महात्मा गांधी मानवीय और सामाजिक समस्याओं को धर्म और कर्तव्य के दायरे में रहकर सुलझाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने न धर्म का विरोध किया और न जाति व्यवस्था का। वर्ण और जाति व्यवस्था को कायम रखते हुए समाज सुधार करना अंत्यजों या शूद्रों का उध्दार करना गांधी जे के कार्यों का उद्येश्य था। इस विचार को व्यक्त करने के लिए मेहता जी ने वाल्मीकि रामायण के शबरी प्रसंग को कथा का आधार बनाया है।

शबरी की कथा त्रेता युग की कथा है। यह समय है जब सतयुग की अरण्य–सभ्यता जिसे ग्राम सभ्यता कह सकते हैं, समाप्त होकर नगर–सभ्यता विकसित हो रही थी। लेकिन विंध्याचल के वनों की जनजातियाँ मात्र आदिम अवस्था का जीवन जीती थीं। सभ्य समाज के लिए वे जनजातियाँ असभ्य थीं। वे पशु–पक्षियों की हत्या करके उनके मांस पर अपनी उपजिविका चलाते थे। इन जनजातियों में शबरी एक थी जिसे पशुहत्या, मांसाहार और अपने घृणा होती है। शबरी उस बुचडखाने जैसे घर से भाग जाती है क्योंकि उसे अपनी जाति एंव परिवार के लोग हत्यारे लगते हैं। इसलिए वह सोचती है–

"पर मनुष्य यह कितना पापी
बैर सभी जीवन से

नहीं जानता क्या होंगा
उसका इस आत्म–हनन से।"[2]

शबरी के माध्यम से कवि मेहता जी ने मनुष्य के अंदर की घृणा और पाप कर्मों को उजागर किया है शबरी हिंसा से घृणा करती है। उसे अपनी ही शबर जाति की हिंसा, लुटपाट, हत्याएँ अनुचित लगती हैं। उसे पशु–हिंसा से घृणा है। कटते हुए पशुओं का काँपना शबरी को स्वप्न मे दिखाई देता है। अतः पूरा वातावरण उसे असमंजस में डाल देता है। वह अपने जीवन मे पीडा और घुटन का अनुभव करती है–

"यह देख–देख शबरी को
जाने कैसा सा लगता
कटे पशुओं का काँपना
उसको सपने में दिखता ।"[3]

गांधी को अभिप्रेत अहिंसा यहाँ उजागर होती हैं। व्यक्तीगत स्तर पर हिंसा को त्यागा जा सकता है। यह व्यक्तिगत त्याग सामाजिकता मे बदल सकता है। शबरी का प्रयास व्यक्तिगत है। वह अपना परिवार, पति और बच्चों को छोडकर पम्पासर में मतंग ऋषि के आश्रम में पहुचती है क्योंकि आश्रम उसके लिए अंत्यजों को पवित्र कर देनेवाली शक्ति है। मतंग ऋषि के साथ हुए साक्षाकार में शबरी का कहना कि,

"क्या आत्मा की उन्नति केवल
है उच्च वर्ग तक ही सीमित
प्रभु तो है सबके पिता, भला
उनका आराधन क्यों सीमित ?"[4]

शबरी खंडकाव्य के प्रथम और व्दितीय सर्ग में कविने शबरी के व्दारा पशुहत्या, मासंभक्षण को त्याग देना और आश्रम की शरण में आना दिखाया हैं। इनमें महात्मा गांधी के विचारों को देखा जा सकता है। गांधी जी ने हिंसा का विरोध करते हुए पशुहत्या का भी विरोध किया था साथ ही आश्रमों की स्थापना करके मानव समानता,मानव सेवा नैतिक शिक्षा,संघटन,अन्याय का अहिंसात्मक विरोध आदि की शिक्षा पर जोर दिया था। अर्थात गांधी जी ने आश्रम की महत्ता स्वीकार की थी इसलिए उन्होंने स्टॉल्यटाय, साबरमती, सेवाग्राम जैसे आश्रमों की स्थापना की थी। शबरी का आश्रम में आना और अपने उध्दार की कोशिश करना गांधी जी की शिक्षा का एक हिस्सा है। कवि मेहता जी ने आत्मा की उन्नति का प्रश्न उपस्थित कर यह बताया है कि सभी मानव अपने आत्मोन्नति की कोशिश कर सकते हैं चाहे वे अत्यंज ही क्यों न हो सभी को समान अधिकार हैं।

एक जगह पर मतंग ऋषि आश्रमवासिंयो के व्यवहार पर चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं –
"कब धर्म–मर्म जागेगा
साधु–समाज के मन में ?"[5]

मतंग के मन का यह सवाल समानता को इंगित करता है। प्रेमचंन्द माहेश्वरी नें 'हिंन्दी रामकाव्य का स्वरूप और विकास' को स्पष्ट करते हुए कहा है–
"प्रेम और भक्ती के आलोक में अस्पृश्यता पुनीत और आनंदमयी हो जाती है।किंन्तु उसका युगीन परिप्रेक्ष्य गांधीवादी जीवन–दर्शन के अभिनव आलोक में ही जगमगाता है।"[6] इसलिए तो मेहता जी ने शबरी को मतंग ऋषि के आश्रम में पुण्य–कर्म, सेवा और भक्ति करते हुए दिखाया है। कवि के लिए प्रश्न था कि अस्पृश्यता कैसे तोडी जाए।यह प्रश्न वाल्मीकि के सामने था और आधुनिक काल में गांधी के सामने भी था। त्रेता युग में शबरी की चिन्तन–शक्ति के साथ उसकी कर्म–शक्ती के कारण उसकी निम्नवर्गीयता असाधारण या विशेष में बदल गयी थी। यह उदाहरण कवि के लिए गांधीवादी विचारधारा को आगे बढने में सहायक है। इसलिए कविने शबरी की रचना की है। शबरी के उध्दार को लेकर मतंग ऋषि को अन्य ऋषि गणों का विरोध झेलना पडा, आश्रम छोडकर जाना पडा। जिस तरह मतंग के सामने शबरी के उध्दार की चुनौती थी उसी तरह गांधी जी के सामने दलितोध्दार की चुनौती थी और कवि नरेश मेहता के सामने भी।

अछुतोध्दार गांधीजी के कार्यक्रमो में एक कार्य था। गांधीजी ने अछुतोध्दार के लिए दलितों की शिक्षा पर ध्यान दिया । स्त्री शिक्षा पर भी उन्होंने ध्यान दिया। गांधीजी के लिए यह कार्य आसान नहीं

था, उन्हें भद्र समाज का विरोध झेलना पडा था। वे जानते थे कि किसी के अथक और निडर प्रयास से यह कार्य संभव है। 'शबरी' में कुछ समांतर स्थिति नजर आती है। शबरी के मतंग ऋषि के आश्रम में आ जाने और मतंग ऋषि के व्दारा शिष्या बनाए जाना अन्य आश्रमवासी साधु–संन्यासी, ऋषि मुनियों के लिए असहय हो जाता है। वे शबरी की कुटिया जला देते हैं। मतंग को साधु समाज का विरोध सहना पडता है। बाद में दोनों को पंपासर का आश्रम त्यागना पडा। मतंग ऋषी ने इसी जगह कुटि बनाकर कीर्तन आराधन आरंभ किया। इससे शबरी में अमुलाग्र परिर्वन आता है। कवि बताते हैं–

"कल तक जो शबरी झाडी थी
उसे सँवारा ऋषि ने,
योग भक्ती में निपुण बनाया,
शबरी को उन ऋषि ने।"[7]

शबरी के तपस्या सर्ग में शबरी तपस्विनी रूप में अंकित है। शबरी पम्पासर के एक कोने में तपोवन से कुछ दूर कटिया बनाकर रहती है। हर रोज ब्रहम–बेला में जागना स्नान–ध्यान करना, फुलों को चुन लाना, आश्रम की सफाई करना, गायों को दाना–पानी देना दूध–दुहना, प्रवचन सुनना तथा ठाकुर की प्रतिमा के सामने तन्मय भाव सें किर्तन करना ये सब पुण्य कर्म हैं। शबरी सेवाभाव में संतोष मानती है। वह कहती है–

"मैं कर लूँगी संतोष मिले,
यदि गायों की सेवा करना।"[8]

शबरी के ज्ञान, जप, किर्तन आराधना, योग भक्ति और सेवा की चर्चाएँ चारों ओर दूर–दूर तक पहुंच जाती है। जिससे प्रभावित होकर श्रीराम लक्ष्मण समेत आश्रम आकर शबरी का उध्दार करते हुए कहते है–

"है, अन्य कौन त्रेता में
जो श्रेष्ठ भक्त शबरी से
हे यन्त्र, यज्ञ यह सब कुछ
सब सिध्द इसी शबरी से।"[9]

अरण्यवासी या प्रकृतजन शबरी में इतना परिवर्तन आज जाता है कि उसमें शिव–शक्ति रूप देखा गया। इस तरह अंत्यजों को अवसर प्रदान किसे जाए तो ऐसे परिवर्तन देखे जा सकते हैं। इसलिए तो लेखक ने लिखा –

"होगी कृतार्थ मानवता,
सुनकर सुगंध गाथा को।"[10]

"कवि की मानवीय दृष्टि ने ही शबरी के साधारणत्व को असाधारणत्व प्रदान किया।"[11] उन्होंने प्रस्तुत खंडकाव्य की भूमिका में लिखा है–"शबरी अपनी जन्मगत निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टि के व्दारा वैचारिक उर्ध्वता में परिणत करती है।"[12] कोई भी व्यक्ती अवसर पाकर जागृत हो सकता है, वह वर्ण, वर्ग, समाज या युग से ऊपर उठ सकता है।

गांधीजी वैष्णव थे, गीता उनका प्रिय ग्रंथ था अर्थात गीता का कर्मसिध्दांत उन्हें मान्य था। नरेश मेहता ने लिखा है। "व्यक्ति कर्म के व्दारा वर्ण–मुक्त होने की चेष्टा कर सकता था।"[13] डॉ.एन.डी. पाटील ने लिखा है – "कवि प्रस्तुत काव्य शबरी व्दारा बताता है कि व्यक्ती का आरंभ विकास उसकी ऊर्ध्वावस्था जन्मगत स्थिति में न होकर कर्मगत चेतना में है। वह निर्देशित करता है कि कर्मगत चेतना ही मानवीय जीवन का लक्ष्य होना चाहिए, तथा इस कार्य में वर्ण–वंश– वर्ग का भेद बाधा रूप नहीं बनना चाहीए।"[14]

नरेश मेहता ने शबरी खंडकाव्य के माध्यम से गांधीजी के विचारों को अभिव्यक्त किया है। वे चिंतक तो थे ही प्रयोगशील भी थे। उन्होंने साहित्य के व्दारा अपने विचारों को व्यक्त किया वे चाहते थे कि दलित अपने कर्मों से ऊपर ऊठकर कार्य करें। गांधी भी यही चाहते थे एक ओर यह अपेक्षा थी तो दूसरी ओर वे उनकी मदद भी किया करते थे अर्थात गांधी ने केवल विचार व्यक्त नहीं किये बल्कि वैसा कार्य भी किया जैसे मतंग ऋषि ने भी किया और श्रीराम ने उसपर मुहर लगाई।

नरेश मेहता के प्रसिध्द खंडकाव्य 'शबरी' की कथा पौराणिक है। यह कथा मुख्यतः वर्णभेद को दर्शाती हैं शबरी निम्न वर्ण की स्त्री थी, जिसने अपने पुण्य कर्म से अपने जीवन का उध्दार कर लिया

था। वह तो त्रेता युग था लेकिन 'शबरी' लेखन का आधुनिक युग है। इस युग में वर्ण–व्यवस्था अभी खतम नहीं हुई है लेकिन स्वतंत्रता ने और नये संविधान ने इसे खतम किये जाने का दावा जरुर किया है। यह वर्ग व्यवस्था का भी युग है। इस युग में आदमी उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, तथा निम्न वर्ग में बँटा हुआ है। निम्न वर्ग इतना शोषित, पीडित और सर्वहारा है कि उसका जीवन–उत्कर्ष असंभव–सा जान पडता है। दूसरी बात यह है कि भारतीय समाज परंपराप्रिय भी है। इसके कारण आधुनिक काल में भी वह वर्ग व्यवस्था को भूल नहीं पाया है। इसी कारण वर्ण–व्यसस्था में अटके निम्न जाति के लोगों का विकास किये जाने का उपाय किया जाता है वह हमारी सामाजिक बुराइयों के कारण असफल हो जाती हैं। ऐसे में कवि नरेश मेहता जी को एक ही रस्ता नजर आता है, वह है 'कर्म' का रस्ता। वर्गमुक्त समाज की कल्पना भी कमजोर सिध्द हो रही है। कवि के लिए यह सबसे बडी समस्या है। उन्होने स्वयं लिखा है – "शबरी अपनी जन्मगत निम्नवर्गीयता को कर्मदृष्टि के द्वारा वैचारिक उर्ध्दता में परिणत करती है। यह आत्मीक या आध्यात्मिक संघर्ष, व्यक्ति के संदर्भ में मुझे आज भी प्रासंगिक लगता है।"[15] कवि इस मनोविज्ञानिक सत्या को उजागर करते हैं कि व्यक्ति खुद अपनी 'स्व' लडाई लडकर 'पर' हो सकता है, वह व्यक्ति विशाल समाज बन सकता है। इस तरह प्राचीनता को खतम किये बिना व्यक्ति या समाज का विकास संभव है, यह गांधीवादी विचार इस कृति के माध्यम से स्पष्ट किया है।

संदर्भ सूची

1. नरेश मेहता का काव्य – प्रभाकर शर्मा, पृष्ठ 132
2. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 7
3. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 27
4. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 19
5. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 47
6. दे. आधुनिक खंडकाव्यों में युग चेतना – डॉ.एन.डी पाटील, पृष्ठ 158
7. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 20
8. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 50
9. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 79
10. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 70
11. शबरी – नरेश मेहता, रचना की प्रासंगिकता पृष्ठ 7
12. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 9
13. शबरी – नरेश मेहता, पृष्ठ 8
14. दे. आधुनिक खंडकाव्यों में युग चेतना – डॉ.एन.डी पाटील, पृष्ठ 317
15. शबरी – नरेश मेहता, भूमिका से.